

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

श्री कृष्ण तुल्यगुणशायि चिदांबर ॥

॥ वागसादगिरि ॥ का

नृपकाल ॥

॥ यत्किं कुरु न कथि लावक मेष न हृषिक

गिरि वरुड न नवजिल माता ॥ एव यत्किं यत्किं ये यारु स्मर

षिक गगन सुनाय वन्द्य विवासाः श्रुत सखि हृदय दमाय

कालयि कृष्ण नाथ सिद्धि सम्भव लाया ॥

॥ वरु कथा ठकः

हाथ लध विद्याः कलि ल कलि दूख द्वाग ॥

॥ संस्तुतः

या गिरि कम संविदा स गलाः म हा हुरव म विप्र षा ॥

वरु वावादि न्ना लिंग स सम्बलः नाय शिव दू विह्वर ॥ ॥

वाक्यलिकालयिचिदंकिहृदयमूर्ध्वरुद्रकृतनयनाद॥ ॥

सहस्रसुखद्विधेयाः गायत्रिकर्त्तृणा हृदययवनयुताद॥ ॥

॥ ॥ एहाम्नालिंगा हृदयनीलवर्णविलासयिषुनयकवः

॥ ॥ धुकि सिन्धुवपुष्पादीभिः ॥ धनं लिख्यमाणम् ॥ ॥

॥ न कुरुत न न ना नाना हं ॥ नाना हं हं हं नाना हं हं नाना हं हं

॥ गङ्गाङ्गि न उर्ध्वदाथयधः ॥ ॥ गङ्गाङ्गि न उर्ध्वदाथयधः ॥

लियाः कमवंकुलिषाम् कवात्तन॥ दमवृकवर्णिकुल्लिषु

नः वामरवद्भागकणत्तन॥ ॥ श्रीधिसम्पदमूर्ध्वयवाक्यलिषुम

कम्पत्तन॥ ॥ ॥ ॥ मावयिष्ययापियाविषमायाः सहस्रानाः

गङ्गाङ्गि ॥ ॥ ॥

सावकासलिना॥ पाठावसू १५ द्वादशाहा १०४ लिया ८ नलमि
 लमा ला॥ ॥ विष्णु कलि ऋद्ध वल रुद्रा रुद्रः व्याघ्र वर्म
 षट् मूडा॥ आति धपणा रय विद्यापयिष्य लः कालियाधिः
 दिन मूडा॥ ॥ नितं रु विमलादि क कनकामयः य उ मूरवम्

निवि कला १॥ १॥ ॥ कृति सुवि विलम्ब लनाय कृति शिव कर्मः
 रुवि व विद्या॥ कवु भा णि गाया विव विव ष्य वः पु रु यि स य ल
 सं ण १॥ १॥ ॥ **॥ वाग रु ल व र्म ॥ गाल मू रु मा ० ॥** ॥ दि उ
 रु दि मूर लः ॥ ति नि न य नाः म कृ ट क णा दि ग म्ब या॥ ॥ रु ना

सव नय वि।॥ ५ ॥ स्तुतु कृतानि लून न द। वः सु न्य पा
 द द वि सु न्य। ॥ ५ ॥ काल मृदु द यि पा ण ल व न्दि नाः
 बा ग द्ध व सा रु क व नि न कृ दि ना ॥ ५ ॥ शृ ष्टि सं हा व णी ना
 वृ णि द विः सा क्क सा र्ग द वि तु क्त य वि स व। ॥ ५ ॥

॥ या ग म ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सुवर्षनिधेयनरुक्मिणः॥ ॥ नवविंशतिमावशावन्मृतीस
मवदियावन्मृतिमिकवमदिदयाः उवमरुवममावुपुशुपुवि
सुवसागावन्मिपवमाववकुगीना॥ ॥ **यामकनदि॥ काल**
हककाल॥ ॥ मृवनिनिदिनवाभकानुवसवः रवप्रकिवया
ननादवमगलकानुका॥ लालकनिविधधमिगवुपुशुपुना॥ हनदकि

मरवाकमुद्रा॥ ककानुकाकविमववकुहलवाहा॥
मावसंथासाः वागवसमाकवन्दिनपाठाः विरवनवायामृवव
विवा॥ ॥ नमामिथीयनुमहालापमकाकमृणनिधुदिना॥
विष्णनाथविष्णव्यापिकविदविकर्ममहाकाधवायाः काकमृण
निधुदिना॥ ॥ मृकिरिषभागाउगुपवभाः डमकलालविष

ककिलनाः पीठिकम् धवाक कलनय नावे निसंजासात्रारवद्वस
 यथा॥ ॥ साधवमायापुननयकायुद पिष्ठायापान्दयरुवन
 समससमायागविभादाः शानवागसमादिनददा॥ ॥ वत्त
 यथायकलिकमोजिकयुलनापुननकासाः सुवनयनाग

॥ साधवमायापूव नययक्रावृद्ध पिठम यापान्दव रुवन

समस्तसमायागविभाहः शान्तयोगसमादिष्टदहा ॥ ॥ ॥

रघुनाथ कलिकाली कयूनापूवड नडुन का लाः पूव नय नाग

सन्दि कयव नाः गाय हूय श्व य नूय व वि ना॥

॥ सा ग क न दि ॥

श्री गुरु नारायण विष्णु लक्ष्मी नमः शिवाय ॥ ॥ वाग्वक्त्रं नादि ॥
सकल ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३१ पुनः नयापिना ॥ ५१ ॥ पूरकधनुः शुभपत्रमयुः शुभायाश्च